डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No- 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–25 मार्च, 2020)

हिन्दी भाषा का सामान्य परिचय

हिन्दी साहित्य को समझने के लिए हिन्दी भाषा के विकास से संबंधित तथ्यों का ज्ञान अत्यंत आवष्यक है। यह जानकर आष्चर्य होगा कि 'हिन्दी' विष्व की लगभग तीन हजार भाषाओं में से एक है। यह अंग्रेजी भाषा के बाद विष्व की दूसरी बड़ी भाषा है। यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी लिपि को 'लोक नागरी' और 'हिन्दी लिपि' भी कहा जाता है। देवनागरी का नामकरण विवादास्पद रहा है। अधिकांष विद्वान गुजरात के नागर ब्राह्मणों से इसका संबंध जोड़ते हैं। उनका मानना है कि गुजरात में सर्वप्रथम प्रचलित होने से वहां के पंडित वर्ग अर्थात् नागर ब्राह्मणों के नाम से इसे 'नागरी' कहा गया। अपने वजूद में आने के तुरंत बाद इसने देवभाषा संस्कृत को लिपिबद्ध किया, इसलिए 'नागरी' में 'देव' षब्द जुड़कर देवनागरी बन गया। यह लिपि बांयी तरफ से दांयी ओर लिखा जाता है। यह न तो षुद्ध रूप से अक्षरात्मक लिपि है और न ही वर्णनात्मक लिपि।

'हिन्दी' षब्द की व्युत्पत्ति भारत के उत्तर–पष्चिम में प्रवहमान सिन्धु नदी से संबंधित है। विदित है कि अधिकांष विदेषी यात्री और आक्रांता उत्तर–पष्चिम सिंहद्वार से ही भारत आये। भारत में आने वाले इन विदेषियों ने जिस देष के दर्षन किये वह 'सिंधु' का देष था। इरान (फारस) के साथ प्राचीन काल से ही भारत के बेहतर संबंध थे और इरानी लोग 'सिंधु' को 'हिन्दु' कहते थे या उनका उच्चारण 'हिन्दु' होता था। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो भौगोलिक कारणों से 'स' का उच्चारण 'ह' के रूप में तथा 'ध' का 'द' के रूप में ध्वनि परिवर्तन हुआ, जिससे सिन्धु > हिन्दु कहलाया। 'हिन्दु' से 'हिन्द' बना और फिर 'हिन्द' में फारसी भाषा के संबंध कारक प्रत्यय 'ई' लगने से 'हिन्दी' बन गया। 'हिन्दी' का अर्थ है– 'हिन्दी का'। इस प्रकार हिन्दी षब्द की उत्पत्ति हिन्द देष के निवासियों के अर्थ में हुई। बाद चलकर यह षब्द 'हिन्द की भाषा' के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। इस तरह 'हिन्दी' षब्द का विकास कई चरणो में हुआ– सिन्ध > हिन्दु > हिन्द +ई = हिन्दी।

'हिन्दी' षब्द मूलतः फारसी का है। इसका नामकरण फारस के लोगों ने किया। हालांकि कुछ कट्टर हिन्दी प्रेमी 'हिन्दी' षब्द की व्युत्पत्ति हिन्दी भाषा के अन्तर्गत दिखाने की कोषिष की है। ऐसे लोगों का मानना है कि 'हिन' अर्थात् हनन करने वाला और 'दु' मतलब 'दुष्ट'। इस तरह दुष्टों का हनन करने वाली भाषा 'हिन्दी'। इसी तरह एक दूसरा अर्थ भी निकाला गया–'हिन्दु' अर्थात् 'हीनों' का दलन करने वाला और उनकी भाषा 'हिन्दी'। इन सबमें प्रमाण कम अनुमान अधिक लगाया गया है, जिसके कारण पहला अर्थ ही विद्वानों के बीच स्वीकृत है।

तत्कालीन समय में 'हिन्दी' षब्द के दो अर्थ थे। एक, 'हिन्द देष के निवासी' और दूसरे, 'हिन्दी की भाषा'। उर्दू के प्रसिद्ध षायर ने लिखा भी और गाया भी, ''हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा'/'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'। इकाबाल यह बात अलग है कि आज यह षब्द इन दो आरंभिक अर्थों से अलग हो गया है। आज इस देष के निवासियों को कोई 'हिन्दी' नहीं कहता। भारतवासी या हिन्दुस्तानी आदि कहते हैं। यहां ध्यान देने की बात है कि भारत की सभी भाषाएं

हिन्दी नहीं कहलाती हैं। वे हिन्द की भाषाएं कहलाती हैं पर हिन्दी नहीं। उन्हें हम पंजाबी, बांग्ला, असमिया, उड़िया, मराठी, तमिल, तेलगु, कन्नड़ आदि नामों से पुकारते हैं। इसलिए हिन्द की इन सब भाषाओं के लिए हिन्दी षब्द का प्रयोग नहीं किया जाता है।

इस तरह हिन्दी षब्द भाषा विषेष का वाचक नहीं है बल्कि यह भाषा समूह का नाम है। हिन्दी जिस भाषा समूह का नाम है उसमें आज के हिन्दी प्रदेष और हिन्दी पट्टी या क्षेत्र की 5 उपभाषाएं तथा 17 उपबोलियां षामिल हैं। बोलियों में ब्रजभाषा, अवधि एवं खड़ी बोली को मध्यकाल में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। आधुनिक काल में खड़ी बोली का पर्याप्त विकास हुआ और आज वह राष्ट्रभाषा के रूप में मौजूद है। खड़ी बोली का आरंभिक रूप या बीज रूप का आभास आदिकाल के सरहपा आदि सिद्धों, गोरखनाथ आदि नाथों, अमीर खुसरो जैसे सूफियों तथा भक्तिकाल में कबीर आदि संतों की रचानाओं में देखने को मिलता है।

आकृति या रूप के आधार पर हिन्दी 'वियोगात्मक' या 'विष्लिष्ट' भाषा है। भाषा परिवार के आधार पर हिन्दी भारोपीय (इन्डो–यूरोपियन) परिवार की भाषा है। भारत में 4 भाषा परिवार हैं–

1. भारोपीय
2. द्रविड़
3. आस्ट्रिक और
4. चीनी–तिब्बती।

भारत में बोलने वाले लोगों के प्रतिषत के हिसाब से भारोपीय परिवार सबसे बड़ा भाषा–परिवार है। इसे प्रतिषत के हिसाब से देखें तो अधिक स्पष्ट होगा–

भाषा–परिवार		**भारत में बोलनेवालों का प्रतिशत**
भारोपीय	–	73 प्रतिषत
द्रविड़	–	25 प्रतिषत
आस्ट्रिक	–	1.3 प्रतिषत
चीनी–तिब्बती	–	0.7 प्रतिषत

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'हिन्दी' भारतीय/भारत–यूरोपीय के भारतीय ईरानी (इन्डो–ईरानियन) षाखा के भारतीया आर्य (इन्डो–आर्यन) उपषाखा की एक भाषा है। इसका विकास संस्कृत >पालि >प्राकृत >अपभ्रंष >अवहट्ट >प्राचीन प्रारंभिक हिन्दी के रूप में हुआ है। प्राचीन हिन्दी से अभिप्राय है– अवभ्रंष–अवहट्ट के बाद की भाषा।

दिनांक : 25/03/2020 डॉ. महेष प्रसाद सिन्हा

डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा